''सच्ची दाखलता मैं हूं''

(15:1-16:4)

नॉरमन रॉकवैल की बनाई पेन्टिंग की एक तस्वीर मेरे अध्ययन कक्ष में लटकी हुई है। इस तस्वीर में एक कहानी मिलती है जो हम में से हर एक के साथ कभी न कभी घटित होती है: यह कहानी घर छोड़ने की है। इस तस्वीर में एक पिता को अपने पुत्र के पास परिवार का सामान ढोने वाले एक पुराने ट्रक में बैठे दिखाया गया है, शायद वह पुत्र को कॉलेज छोड़ने के लिए बस की प्रतीक्षा कर रहा है। पिता ने घिसे पिटे कपड़े पहने हुए हैं पुत्र टाई सूट पहने हुए है। पिता बूढ़ा, गंवार और चिन्तित सा लग रहा है। पुत्र जवान, उमंग से भरा दुनिया देखने को लालायित लगता है। चित्र में उदासी का एक स्पर्श है; पिता और परिवार के कुत्ते को देखकर दया आती है जिसे पता है कि यह ''विदा'' होने का समय है और दुखी होकर उसने अपना सिर जवान आदमी की टांगों पर रखा हुआ है। कई बार जब मैं इस तस्वीर को देखता हूं तो इस जवान आदमी में मुझे अपना चेहरा दिखाई देता है। आजकल, बहुत बार अपने पिता की तस्वीर मुझे अपनी ही लगती है। कभी-कभी कुत्ते में भी मुझे अपना आप दिखाई देता है!

एक प्रश्न जो रॉकवैल की पेन्टिंग पूछ रही लगती है वह यह है कि, ''पिता क्या सोच रहा है?'' मैं कल्पना करता हूं कि जब बस आएगी तो दोनों खड़े होंगे और पिता कहेगा, ''बेटा, वहां अपना ध्यान रखना, सुन रहे हो न?'' या शायद यह कि ''बेटा, अपनी मां को पत्र ज़रूर लिखना। वह तेरा बहुत फ़िक्र करेगी।'' जो भी हो, मेरी दिलचस्पी इस बात में नहीं है कि वह क्या कहेगा, क्योंकि मेरी भावनाएं तो उसके मन में ही छुपी रहती हैं। मुझे लगता है कि वह अपने बेटे के भविष्य के बारे में सोच रहा है। क्या वह उसके लिए तैयार है? क्या उसे अच्छे दोस्त मिल जाएंगे? क्या उसे समझ आ जाएगी कि मन की पीड़ा पर कैसे काबू पाना है? क्या वह सफलता से बदल जाएगा? क्या पिता ने संसार में रहने के लिए उसे सब आवश्यक बातें समझा दी हैं?

रॉकवैल की इस तस्वीर में बस अड्डे पर पिता और पुत्र की तस्वीरों से हमें अपने पाठ का अध्ययन करने की तैयारी मिलती है। यूहन्ना 13 से 17 अध्याय में क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु के अन्तिम कुछ घण्टों के बारे में लिखा गया है। अध्याय 13 में उसने चेलों के पांव धोए, और अध्याय 14 में उनके भय को दूर किया। पवित्र शास्त्र के इस भाग अर्थात यूहन्ना 15:1-16:4 में हम देखेंगे कि उसने अपने चेलों को आने वाले कष्ट का सामना करने

के लिए कैसे तैयार किया। उसने उन्हें उसके बिना कठिनाई का सामना करने के लिए तीन मुख्य मुद्दों की पूर्व कल्पना करके तैयार किया।

पहली बात: लोगों से सताव (15:18-16:4)

क्या कभी ऐसा हुआ है कि आपको किसी ने नापसन्द किया हो या आप से घृणा की हो और आपको पता न हो कि उसने ऐसा क्यों किया? मेरी बहन के साथ उसके कॉलेज के दिनों में ऐसा ही हुआ था। उसने ध्यान दिया कि एक छात्र उसकी ओर ऐसे देखता था जैसे वह उससे घृणा करता हो, परन्तु उसे उस व्यक्ति का नाम तक पता नहीं था। कई बार जब वे एक दूसरे के पास से गुज़रते, तो मेरी बहन मुस्कुराते हुए उसे नम्रतापूर्वक ''नमस्कार'' करती थी। परन्तु वह भौंहें चढ़ाकर, दूसरी ओर देखता और क्रोध में लम्बी सांस लेता था। उसने इस अजीब स्थिति के बारे में अपनी सहेलियों को भी बताया, परन्तु उन्हें लगा कि यह उसकी कल्पना होगी।

एक दिन मेरी बहन को किसी दूसरे दम्पत्ति और उनके एक युवक मित्र के साथ बाहर जाने को कहा गया। वह मान गई। जिस दिन उन्होंने जाना था वह रात आ गई और उसके साथ जाने वाला युवक कोई और नहीं बल्कि वही छात्र था जो उससे घृणा करता था! उसके लिए वह शाम बहुत ही भयानक थी। उसने न केवल उसके प्रति अपनी घृणा दिखाई बल्कि वास्तव में उससे घृणा की भी। उसने कोई भी अच्छी या भद्र बात नहीं की और यहां तक कि उसने उस दिन को आनन्दमय बनाने का भी कोई प्रयास नहीं किया। मेरी बहन यह सब देखकर बहुत घबरा गई। उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जिससे उसे लगता कि उसने उस व्यक्ति को दुख पहुंचाया हो, फिर भी उसने उससे ऐसा व्यवहार किया जैसे वह उसकी सबसे बड़ी दुश्मन हो। बाद में मेरी बहन को पता चला कि उसकी शक्ल उस लड़के के गांव की किसी पुरानी मित्र (गर्लफ्रैंड) से मिलती थी जिसने इस युवक के स्कूल छोड़ने से कुछ देर पहले उसका दिल तोड़ा था!

हमारे पाठ के इस भाग में, यीशु ने अपने चेलों को चेतावनी दी कि उनके सामने कठिन समय आने वाला है। शीघ्र ही उन्होंने भी मेरी बहन की तरह घबरा जाना था! यीशु ने उन्हें इस पीड़ादायक अनुभव के लिए कई तरह से तैयारी करवाई। पहले तो, उसने उन्हें यह बताते हुए कि जब संसार उनसे घृणा करता है, उन्हें याद रखने के लिए कहा कि संसार ने इससे पहले यीशु से भी घृणा की थी (15:18)। उसके चेले होने के कारण उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जा सकता था जैसा उससे किया गया था (15:20)। यदि संसार ने उसकी सुनी होती, तो वह उनकी भी सुनता। परन्तु साधारणत: संसार ने उसे सताया ही था, इसलिए वे अपेक्षा कर सकते थे कि संसार उनके साथ भी वैसा ही करेगा।

यीशु ने उन्हें बताया था कि उन पर संसार की ओर से सताव, ''व्यक्तिगत'' नहीं, बल्कि उसके चेले होने के कारण आएगा (15:21)। वह अपने चेलों को बताना चाहता था कि उनसे घृणा करने वाले लोगों ने उससे और उसके पिता से भी घृणा की थी (15:23)।

यीशु जानता था कि आने वाले सताव के बारे में सबसे अधिक निराश करने वाली बात का कोई अर्थ नहीं होगा! उसने पहले से ही देख लिया था कि यह ''व्यर्थ'' होगा (15:25)। उसे आशा थी कि समय से पहले जानने से चेलों के लिए इसे सहन करना आसान हो जाएगा।

चेले आराधनालयों से बाहर निकाले जाने की अपेक्षा भी कर सकते थे।[1] उनके लिए यीशु की चेतावनियों में से सबसे अधिक पीड़ादायक बात यही होगी: ''जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं'' (16:2)। क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूर्व संध्या पर यीशु ने उन्हें इतना निराश करने वाला समाचार क्यों दिया? क्योंकि वह उन्हें तैयार करना चाहता था ताकि वे कठिन समय आने पर विचलित न हो जाएं (16:1)। यीशु द्वारा आने वाली कठिनाइयों की चेतावनी पहले से देने पर उन्होंने हताश नहीं होना था (16:4)। उन्हें उत्साहित करने और समझाने के लिए यीशु के उनके साथ होने के कारण उन्हें ऐसी किसी चेतावनी की आवश्यकता नहीं थी। उसके लिए उनसे अलग होने की तैयारी करते हुए, उनके आत्मिक जीवन के लिए ये शिक्षाएं देनी आवश्यक थीं।

यीशु के अनुयायियों के रूप में आज हमारी स्थिति कुछ अलग हो सकती है, परन्तु हमें भी कठिनाई का सामना करने के लिए उसकी बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। संसार में आज भी कई स्थानों पर, मसीही लोगों को भारी विरोध का सामना करना पड़ता है। उन्हें मारा जाता है या जेलों में डाला जाता है। उनके घरों को जला दिया जाता है, या उन्हें प्रार्थना भवन तक नहीं जाने दिया जाता। ये मसीही लोग इस आयत में यीशु की बातों को समझ सकते हैं। वे जानते हैं कि उन्हें इन कष्टों के आने पर हैरान नहीं होना चाहिए, क्योंकि यीशु ने भी दुख उठाया था!

दूसरे मसीहियों को शारीरिक सताव की तुलना में सामाजिक सताव सहना पड़ सकता है। शारीरिक रूप से उन्हें चाहे मारा तो न जाता हो, परन्तु उनके विश्वास के कारण उनका ठट्ठा उड़ाया जाता है और उनके भरोसे के कारण लोग उन पर हंसते हैं। 1992 में फिल्म आलोचक माइकल मैडवेड ने *हॉलीवुड vs. रिलिजन* के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसमें उसने दिखाया कि फिल्म उद्योग कैसे धर्म और धार्मिक मूल्यों का ह्रास करने का कोई अवसर नहीं गंवाता। बाद में उसने *हॉलीवुड vs. रिलिजन* के नाम से एक वीडियो फिल्म भी बनाई। पुस्तक और वीडियो दोनों में ही उसने यह बताया कि इस पर धन तो काफी खर्च आ जाता है, परन्तु लगता है कि हॉलीवुड के फिल्में बनाने वाले परमेश्वर में विश्वास रखने वालों पर आक्रमण करते हैं।

कई बार सताव मसीही व्यक्ति के अपने ही घर में बहुत तीव्र होता है। एक पति या पत्नी विश्वासी जीवन साथी की अलोचना करके उसके विश्वास का अपमान कर सकता/सकती है। ऐसे सताव का यह रूप सबसे कठिन हो सकता है। निश्चय ही यही कारण है कि पहली शताब्दी के मसीहियों को अपने गैर-मसीही साथियों के साथ रहने का निर्देश दिया तो गया था, परन्तु कोई मसीही गैर-मसीही के साथ विवाह करने की बात सोच भी नहीं सकता था (1 कुरिन्थियों 7:12-16, 39)।

पौलुस, जो स्वयं सताव से अनजान नहीं था, ने रोम में कलीसिया को लिखा, ''जहां

तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो'' (रोमियों 12:18)। इस आयत के पहले दस शब्दों से लगता है कि मेल मिलाप रखना हमारे अपने वश में नहीं होता। कई बार हमारे आत्मिक विरोधी मामले को सुलझने नहीं देना चाहेंगे, जिससे हमें सताव सहना पड़ेगा। यीशु की सताए जाने और उसके पीछे चलने के लिए दुख उठाने की चेतावनी को ध्यान में रखते हुए हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए। उसकी बातें ठोकर लगने से बचाने में सहायता करती हैं!

दूसरी बातः यीशु से जुदाई (15:1-8)

स्पष्टतया हमने पीछे से आरम्भ करके शास्त्र के अपने इस भाग के लिए एक असामान्य ढंग अपनाया है। ऐसा करने का कारण उस समस्या को देखना था जो इसमें बताई गई है ताकि हमें उस सम्बन्ध का महत्व समझ आ सके जो यीशु ने पहले बताया था। वरना, हो सकता है कि हम इस भाग को एक दिलचस्प आत्मिक पाठ के रूप में तो देखने लगें, परन्तु इसमें से सताव की समस्या को निकाल दें। इसलिए हमने इस अध्याय के अन्त से आरम्भ किया था और अब हम आरम्भ को समझ सकते हैं।

यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है'' (15:1)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में वर्णित सात ''मैं हूं'' वचनों में यह अन्तिम है। दाखलता और शाखाएं पिता, पुत्र और पुत्र के चेलों के बीच सम्बन्ध के लिए रूपक हैं। यीशु दाखलता है, पिता किसान (या माली) है, और चेले शाखाएं हैं। शाखाओं पर लगने वाला फल चेलों के जीवनों में पाई जाने वाली भक्ति है।

यीशु के संदेश के इस रूपक में दाख पर लगी शाखा की तरह उससे जुड़े रहने के महत्व को दर्शाया गया है। साथ जुड़े न रहने से शाखा सूख जाती है। फलदायक शाखा होने के लिए दाख के साथ जुड़े रहना आवश्यक है और जुड़े रहने के बावजूद फल न देने वाली शाखा को काट दिया जाता है। यीशु ने समझाया कि किसान फल न देने वाली टहनियों को काटकर आग में डाल देता है (15:6)। उसने यह भी बताया कि माली फल देने वाली टहनियों को ढूंढ़कर उन्हें काटता-छांटता है ताकि वे और फल दे सकें (15:2)। इस अध्याय की प्रारम्भिक आयतों में यीशु ने, काटने-छांटने की बात से संकेत दिया कि यीशु के पीछे चलना चेलों के लिए भविष्य में पीड़ादायक होगा।

यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि चेलों के लिए उसमें ''बने'' रहना आवश्यक है। सात आयतों में सात बार (15:1-7) ''बने'' रहने का शब्द यीशु के मुख पर मिलता है। इसका अर्थ है ''लगे रहना'' या ''स्थिर रहना।'' जैसे शाखा को दाख से भोजन मिलता है वैसे ही चेलों को यीशु से जुड़े रहकर जीवन मिलता था। उनके लिए ऐसे नाज़ुक समय में इस बात को भूलना बहुत खतरनाक होगा। दाखलता से अलग होने पर, उन्होंने मर जाना था और उन्हें दाखलता की देखभाल करने वाले द्वारा आग में जला दिया जाना था।

अगले चौबीस घण्टों में चेलों पर एक बहुत बड़ा दुख आने वाला था और उनके सामने कई विकल्प थे। यीशु के अनुयायियों के रूप में, हम पर भी यदि शारीरिक पीड़ा नहीं परन्तु

विरोध और आत्मिक दबाव तो आएगा ही, और हमारे सामने भी कई विकल्प होंगे।

यीशु के लिए सताए जाने पर, हम उसे छोड़कर जा सकते हैं।

यीशु के लिए सताए जाने पर, हम ठगे से महसूस कर सकते हैं।

यीशु के लिए सताए जाने पर, हम उससे मुकर सकते हैं।

यीशु के लिए सताए जाने पर, हम *दाखलता से जुड़े* रह सकते हैं!

तीसरी बातः प्रेम की आवश्यकता (15:9-17)

दाखलता में ''बने'' रहने के अलावा, चेलों को प्रेम में ''बने'' रहने के लिए भी कहा गया था। यीशु के अनुयायियों के लिए प्रेम का बहुत ही महत्व है! पहले, यीशु ने अपने चेलों के पांव धोकर दिखाया था कि उसकी शिक्षा में प्रेम का महत्व कैसे है। उस समय, उसने कहा था:

> मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (13:34, 35)।

''जैसे मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो'' (15:12) को यीशु ने ''मेरी आज्ञा'' (मत्ती 15:12) कहकर आवश्यक बताया। परमेश्वर से और एक दूसरे से प्रेम करना सुसमाचार के संदेश का सार है (मत्ती 22:34-40)। यूहन्ना रचित सुसमाचार के इस भाग में भी प्रेम पर ज़ोर दिया गया है। सी. एच. डॉड ने ध्यान दिया कि आरम्भिक बारह अध्यायों में ''प्रेम'' शब्द केवल छह बार मिलता है, जबकि 13 से 17 अध्यायों में 31 बार है।

इन आयतों में ''प्रेम'' कोई भावनात्मक भावना नहीं है। इसके विपरीत, यीशु ने स्पष्ट किया कि वह उस प्रेम की बात कर रहा है जो क्रूस पर उसकी मृत्यु में देखा जा सकता है। यद्यपि चेलों को यह समझ नहीं आई होगी कि ''इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (15:13) का क्या अर्थ होगा, परन्तु आप और मैं देख सकते हैं कि वह अगले दिन होने वाली अपनी मृत्यु की ही बात कर रहा था। आज भी उसके चेलों से कहा जाता है, कि प्रेम के उसके नमूने के अनुसार करें, अर्थात वही प्रेम रखें जिसके कारण यीशु को क्रूस पर चढ़ना पड़ा।

सारांश

यीशु ने हमें चेतावनी दी है कि जो लोग उसके पीछे चलने का साहस करते हैं उन्हें सताव की अपेक्षा करनी चाहिए। किसी न किसी रूप में, सब मसीहियों को अपने विश्वास के कारण दुख उठाना पड़ता है। तो दुख आने पर हमें क्या करना चाहिए? यीशु का उत्तर यह है कि ''दाखलता में बने रहो'' और ''एक दूसरे से प्रेम करो।''

यीशु यह निर्देश देकर अगले दिन प्रेम के सबसे बड़े प्रदर्शन के रूप में क्रूस पर चढ़ने के लिए चला गया। परन्तु बदले में उसे प्रेम नहीं मिला। इसके स्थान पर, उसे गालियां दी गईं, उस पर थूका गया, पीटा गया, अपमानित किया गया और मार डाला गया। संसार की विवेकहीन घृणा का यह सबसे खतरनाक दृश्य था। उनके इस पागलपन में भी, यीशु ने वफ़ादारी और प्रेम हमारे नगर में ही दिखाया। सताव सहकर भी उसने हमें इस पर विजय पाने का मार्ग दिखाया।

हमारे नगर में असामान्य बुरा दिन होने पर हम एक वाक्य का इस्तेमाल करते हैं। हम कहते हैं, ''मेरी मां कहा करती थी कि ऐसा दिन आएगा।'' मसीह का नाम अपनाने के सौभाग्य के कठिन दाम चुकाने के लिए कहे जाने पर, हम इसी प्रकार कह सकते हैं, ''मेरा प्रभु कहता था कि ऐसा दिन आएगा।'' उसने केवल दुख के आने की बात ही नहीं की, बल्कि हमें यह भी बताया कि दुख आने पर हमें क्या करना है: दाखलता से जुड़े रहें, और एक दूसरे से प्रेम करें!

पाद टिप्पणियां

[1]देखिए यूहन्ना 9:22, 34, 35. आराधनालय से बाहर निकाला जाना प्रार्थना भवन से अस्थाई रूप से निकाले जाने से अधिक था। आराधनालय एक समुदाय के सामाजिक और धार्मिक केन्द्र को कहा जाता था। अपने परिवार और लोगों से निकाला जाना यीशु के पीछे चलने का एक पीड़ादायक दाम होना था। [2]सी. एच. डॉड, *द इन्टरप्रिटेशन ऑफ़ द फोर्थ गॉस्पल* (कैम्ब्रिज: द यूनिवर्सिटी प्रैस, 1958), 398.